

*schlafft*: खिन्नः कार्यतोषे नृणाम् M. 7, 141. कान्तेन मरुता खिन्नास्तत्पुनस्ते नराधिपम् MBh. 1, 8102. यदा धर्मप्रधानस्य धर्मतेनुर्विभिद्यते । तदा खिन्नस्य सौमित्रे नास्तिव्यमुपजायते ॥ R. 3, 69, 5. सर्पसमुत्तायामखिन्नमथाङ्ग BHART. 1, 47. — MĀKĪH. 52, 5. PAÑKĀT. 1, 224. HIT. III, 72. MEGH. 13, 33. 39. ÇRĀṆGĀRAT. 10. RAGH. 3, 11. KATHĀS. 2, 2. 4, 21. 3, 28. KĀURAP. 3, 20. GLT. 3, 2, 7. DAÇAK. in BENF. Chr. 199, 16. ÇIÇ. 9, 11. — caus. *niederdrücken, belästigen, beunruhigen; ermüden, abspannen*: ममानिमित्तानि हि खिद्यन्ति MĀKĪH. 143, 14. सव्यापारमकनि न तथा खिद्येद्विप्रयोगः MEGH. 86, v. I. SĀH. D. 44, 8. BHĪG. P. 3, 2, 16. तेन खिद्यसे नस्त्वम् 2, 3, 7. खिदितो द्रोणकर्णायो दौःशामनिवशं गतः MBh. 14, 1825. प्रमुखाः पानखिदिताः R. 5, 13, 47. खिदिताः दुःखिताश्चैव 4, 34, 17. HIT. 83, 16. R. 5, 7.

— *herbeiziehen, ansichreissen*: आस्य वेदः खिदति कति नयम् RV. 4, 23, 7. शत्रूपतामा खिदा भोजनानि AV. 4, 23, 7. आहं खिदामि ते मेनो राजाश्चः पृथ्वाभिमेव 6, 102, 2. नमं आखिदते VS. 16, 46. यदेनेनाखिदत्तस्मात्खादिरो यूयो भवति ÇAT. Br. 3, 6, 2, 12.

— *उद् herausziehen*: वपाम् AIT. Br. 2, 6, 12. ÇAT. Br. 3, 8, 2, 16. 3, 2. 4, 3, 2, 1. TS. 2, 1, 4, 4. 6, 3, 9, 3. KĀTJ. ÇH. 6, 6, 12. 25, 10, 2. ĀÇV. GRHJ. 1, 11. इति ब्रह्मभिरुत्खिदन् AV. 4, 11, 10. एकं पादं नोत्खिदति सलिलाङ्गम उच्चरन् 14, 4, 21. शफानुत्खिदती (ब्रह्मगवो) 12, 3, 19. ते (पशुं) पृष्ठं प्रति संगृह्योर्दस्विदत् TS. 2, 1, 5, 1.

— *ni niederziehen, — drücken*: वा यूजा नि खिदत्सूर्यस्वेन्द्रश्चक्रम् RV. 4, 28, 2. Hierher und nicht zu *ni* ist wohl auch zu stellen: शतापाष्टा नि गिरति तां न शक्नोति निषिदम् *er verschluckt die verbotene Speise, kann sie aber nicht hinunterbringen* (in den Magen) AV. 5, 18, 7.

— *परि 4 Kl. sich gedrückt fühlen, sich beunruhigen*: लोकसंस्थानविज्ञान आत्मनः परिखिद्यतः BHĪG. P. 3, 9, 28. परिखिन्न *ermüdet, erschlafft*: उत्सङ्गे ऽस्याः शिरः कृत्वा मुधाय परिखिन्नवत् MBh. 1, 1883. लुधिताश्च परिश्रान्ताः परिखिन्नाः पिपासिताः R. 4, 31, 3. स्तनभरं BHART. 1, 53. — caus. *betrüben*: नः परिखिद्यन् BHĪG. P. 1, 17, 7. कात्तावियोगपरिखिदितचित्तवृत्ति R. 6, 26. परिखिदितविन्ध्यवोरुधः *mitgenommen, zu Grunde gerichtet* BHART. 10, 28.

— *प्र wegstossen*: प्रखिदते VS. 16, 46.

— *सम् 1) zusammenfassen, hineinstopfen*: समितान्वत्रकाखिदत्वे ग्रौ इव खेदया RV. 8, 66, 3. स पज्ञानो षोडशधेन्द्रियं वीर्यमात्मानमभि समस्विदत् TS. 6, 6, 4, 1. — 2) *mit sich fortziehen, ausreissen*: अथ ह प्राण उच्छिन्नमिष्यत्स यथा मूल्यः पट्टिशङ्कून्संखिदे देवमितरान्प्राणान्समाखिदत् KUN. UP. 5, 1, 12.

*खिदिर्* (von *खिद्*) m. 1) *ein Büsser*. — 2) *ein Armer* UNĀDIR. im SĀṆKSHIPTAS. ÇKDR. — 3) *der Mond* UN. 1, 51. — 4) *ein Bein*. Indra's H. Ç. 30.

*खिद्रे* (wie eben) 1) m. a) *ein Armer*. — b) *Krankheit* UN. 2, 13. — 2) n. *Presse oder Anziehungsmittel* NIR. 11, 37. बक्रित्या पर्वतानां खिद्रे विभर्षि पृथिवि RV. 5, 84, 1. — Vgl. *अखिद्रयामन्*, wo *खिद्र* wohl als subst. *Ermüdung* aufzufassen ist.

*खिदन्* (wie eben) adj. *drängend*: कस्ते भागः किं वयौ दुध खिदः RV. 6, 22, 4.

*खिन्दक* oder *खिन्धि* m. N. pr. eines arabischen Astronomen. Alkindi, Verz. d. B. H. No. 881. Ind. St. 2. 247. 249. 264.

*खिरिकिरी* f. N. einer Pflanze (s. मरुसमझा) RĀGĀN. im ÇKDR.

*खिलं* m. n. Siddh. K. 230, b, 9. 1) *ein zwischen bebauten Feldern liegendes nicht urbares Stück, Oede, kahles Land*: दृता दृना व्याकरं खिले गा विष्टिता इव AV. 7, 113, 4. यदा उर्वरयोर्संभवे भवति खिल इति वै तदाचनते ÇAT. Br. 8, 3, 4, 1. KAUÇ. 141. Nach AK. 2, 1, 5: adj., nach H. 940 und MED. I. 13: n. — 2) *ein unausgefülltes Stück, Lücke; was zur Ausfüllung einer Lücke in einem Buche dient, Supplement*: धर्मशास्त्राणि चैव हि । आख्यानानीतिकामांश्च पुराणानि खिलानि (KULL.: = श्री-सूक्तशिवसेवकत्वादीनि) च ॥ M. 3, 232. हरिवंशस्ततः पर्व पुराणं खिलसे- शितम् MBh. 1, 357. fg. खिलेषु हरिवंशश्च 642. कुत्तापाद्यं मूकं खिले कु- तापनामके ग्रन्थे समाप्तात् SĪ. zu AIT. Br. 6, 32. Ind. St. 1, 76 (खिलव, खिलवृष). 83. 183. DVIVEDA zu ÇAT. Br. 14, 8, 1, 1. खिलकाण्ड ebend. Verz. d. B. H. No. 211. 212. 216. खिलग्रन्थ COLEBR. Misc. Ess. I, 326, N. 2. खिल = सारसंनिभ MED. a compendium, a compilation, especially of hymns and prayers WILS. — 3) *Rest*: अलं दृग्धैर्दुर्वैर्निः खिलानां शिवमस्तु वः BHĪG. P. 5, 4, 13. — 4) *Leere, Oede* s. v. a. *eine unfruchtbare, ohnmäch- tige, eitle Erscheinung*: मन्ये तदर्शनं खिलम् (BURN.: *une science inutile*) BHĪG. P. 1, 3, 8. स यदा — मेने खिलमिवात्मानमुद्यतः सर्गकर्मणि (BURN.: *quand il eut reconnu sa propre impuissance*) 6, 4, 49. तस्यैव खिलमात्मानं मन्यमानस्य खिद्यतः (BURN.: *coupable*) 1, 4, 32. — 5) = *वेधम्* MED. ein Bein. Brahman's und Vishnu's WILS. — Vgl. *अखिल, निखिल* und die folg. Artikel.

*खिलीकर* (खिल + 1. कर्) 1) *zu einer Oede —, unwegsam machen*: मुकेतुमुतया खिलीकृते — पथि RAGH. 11, 14. खिलीकृता स्वर्गपद्धतिः 87. — 2) *ohnmächtig machen, aller Macht berauben*: माननीयानधृष्याश्च म- कावश्यान्महीपतीन् । अहीनिव खिलीकृत्य RĀGĀ-TAR. 3, 337. स राव्या- द्यावितो ऽनेन वज्रुश्च खिलीकृतः MĀK. P. 9, 5. DAÇAK. 168, 4.

*खिलीभू* (खिल + भू) 1) *zu einer Oede —, unwegsam —, versperrt werden*: खिलीभूने विमानानां तदापातभयात्पथि KUMĀRAS. 2, 45. — 2) *ver- eitelt werden*: प्रज्ञाग्रात्खिलीभूतस्तस्याः स्वप्ने समागमः ÇĀK. 149. Nach dem Sch. = *डुर्लभ*.

*खिल्यं* m. 1) = *खिल* 1: *उत् खिल्या उर्वराणां भवन्ति* RV. 10, 142, 3. Diese Bed. scheint nicht zu passen in der Stelle: भूयो भूयो रयिमिदस्य वर्धयन्मग्निं खिल्ये नि दधाति देवयुम् 6, 28, 2, wo man eher etwa *अखि- ल्यभिन्ने in zusammenhängendem, von keiner kahlen Stelle unterbroche- nem Felde* erwartet hätte. — 2) *ein in der Erde liegendes Felsstück, Klumpen u. s. w.*: सैन्धवखिल्यं *Salzklumpen* ÇAT. Br. 14, 3, 4, 12. — Vgl. *वालखिल्य*.

*खीर* N. pr. einer Localität RĀGĀ-TAR. 1, 337.

*खील* m. so v. a. *कील* AV. 10, 8, 4.

*खु, खँवते* einen best. Ton von sich geben DHĀTUP. 22, 55.

*खुङ्गुणी* f. eine Art Laute H. Ç. 82.

*खुङ्गाक* m. *Rappe* H. 1238. — Ein Fremdwort.

*खुन्नं* खँजति *stehlen* DHĀTUP. 7, 18.

*खुञ्जाक* (v. l. *खुञ्जाक*) m. N. einer Pflanze, *Lipeocercis serrata* Roxb., RATNAM. 62.

*खुड्, खोडयति* zerbrechen DHĀTUP. 32, 47, v. l. für *खुपड्*.

*खुडक* *Knöchelgelenk am Fuss* SUÇH. 1, 256, 17. — Vgl. *खुलक*.